हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

अपना देश

सर्वे : हर 10 में से एक छात्र मानसिक तनाव की गिरफ्त में

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई टास्क फोर्स के सर्वेक्षण में किए गए सर्वे में करीब दो प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उन्हें आत्महत्या करने के विचार अक्सर या बहुत अधिक आते हैं। वहीं, करीब 15 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि पिछले एक साल में ऐसा समय आया, जब वे बहुत ज्यादा तनाव, घबराहट या बेचैनी महसूस कर रहे थे।

यह सर्वे देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की मानसिक सेहत से जुड़ी समस्याओं और आत्महत्या की घटनाओं को रोकने के लिए बनाई गई राष्ट्रीय टास्क फोर्स (एनटीएफ) ने किया है। सर्वे के निष्कर्ष टास्क फोर्स की अंतिम रिपोर्ट का हिस्सा हो सकते हैं। यह रिपोर्ट 31 अक्तूबर तक सुप्रीम कोर्ट में जमा किए जाने की उम्मीद है।

■ सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई टास्क फोर्स की रिपोर्ट से खुलासा

आईआईटी दिल्ली और शारदा में दो छात्रों की मौत के बाद छात्रों की आत्महत्याओं पर फिर से ध्यान गया है और लोगों में काफी गुस्सा है। ऐसे में यह सर्वे बहुत अहम हो जाता है। टास्क फोर्स द्वारा किए गए इस सर्वे में 2.43 लाख से ज्यादा छात्रों ने जवाब दिया, जिनमें से 67 प्रतिशत एससी, एसटी और ओबीसी कैटेगरी के थे। छात्रों के सर्वे के अलावा, टास्क फोर्स ने कई संस्थानों का दौरा किया और हितधारकों से बातचीत की। अब तक दिल्ली-एनसीआर, तमिलनाडु, कर्नाटक, असम और पश्चिम बंगाल में अलग-अलग तरह के संस्थानों और विभागों को कवर करते हुए 14 जगहों पर कुल 30 बैठकें की गईं। सर्वे के मुताबिक, लगभग 15 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि पिछले एक साल में ऐसा समय आया जब वे बहुत ज्यादा दबाव या परेशानी में थे, या कई हफ्तों तक लगातार उदास या बेचैन महसूस करते रहे।

34 प्रतिशत छात्रों को कैंपस में बाहरी जैसा महसूस हुआ

32 प्रतिशत छात्रों ने कहा, कैंपस में काउंसलिंग सुविधा नहीं

56 प्रतिशत छात्रों ने प्रशासन पर भरोसा जताया

विद्यार्थियों ने खुलकर बात की

एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि संस्थानों की चौकसी और हिफाजत के बावजूद, अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों ने अपनी पढ़ाई-लिखाई, सामाजिक जीवन, मानसिक स्वास्थ्य, फैकल्टी से जुड़ी और प्रशासनिक दिक्कतों के बारे में खुलकर बात की।

जवाबों का विश्लेषण जारी

वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ओपन-टेक्स्ट फील्ड समेत कई अन्य सवालों के जवाबों का अभी भी विश्लेषण किया जा रहा है। इसके अलावा, मौजूदा सैंपल के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व न करने के कारण, इन नतीजों को शुरुआती और अस्थायी माना जाना चाहिए।

इन उपायों पर तुरंत कार्रवाई की जरूरत

वरिष्ठ अधिकारी ने यह भी कहा कि सामने आ रहे पैटर्न से पता चलता है कि छात्रों के लिए स्ट्रक्चर्ड सपोर्ट सिस्टम बनाने, फैकल्टी ट्रेनिंग, शिकायत (रैगिंग) खत्म करने, संकट के समय के लिए साफ संचालन प्रक्रिया, वास्तविक डेटा के साथ नियमित निगरानी और छात्रों की मानसिक सेहत से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए जवाबदेह और पारदर्शी प्रशासन बनाने जैसे उपायों पर तुरंत कार्रवाई की जरूरत है।